श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

नवम्बर - 2023

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर 6 शहर ____

विद्यार्थी का नाम ____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान		प्रश्न-२ एक ही शब्द में	
(१)	क्षपक श्रेणी	(१)	रेचक
(२)	तेइन्द्रिय	(२)	मिथ्यात्वीओ
(३)	सिद्धियोग	(३)	अनुकंपा
(४)	निस्पृहपणा	(४)	ज्ञानोपयोग
(५)	ध्यान की शुद्धता	(५)	मिथ्यात्व के उदय
(६)	शांतिनाथ भगवान	(६)	अग्निकाय
(७)	वचन अनुष्ठान	(७)	अननुष्ठान
(८)	सूर्य देवता	(८)	प्रविचार नामक
(९)	एक समय	(९)	कवित्व
(१०)	आसनजय	(१०)	भ. शांतिनाथ
(११)	उपशमनादि	(११)	चित्त की शुद्धि
(१२)	गोपाल (ग्वाले)	(१२)	सवितर्क ध्यान
(१३)	एक पल्योपम	(१३)	आर्य सुहस्तिसूरि
(१४)	पवन	(१४)	दिघायु हे
(१५)	भद्रिक	(१५)	अंतर्मुहूर्त
(१६)	उपादेय		
(१७)	संक्रम		
(१८)	निवास स्थान		
(१९)	असंख्यात		
(२०)	श्मशान भूमि		

प्रश्न-२ (जारी)	
(५)	उन्हे
(६)	स्वर्ग
(७)	श्रेणीवाले
(८)	कहलाते है
(९)	पूज्य
(१०)	उत्कृष्ट
(११)	मोहनीय
(१२)	संघयन
(१३)	अधिक
(१४)	पद
(१५)	क्षय होता है
(१६)	निकालना
(१७)	उपद्रव
(१८)	वर्ष
(१९)	दुखना
(२०)	प्राप्त किया जाय

प्रश्न-५ संख्या में जवाब	
(१)	3
(२)	10,000
(३)	7
(४)	3
(५)	15
(६)	8
(७)	1 करोड़
(८)	5
(९)	10
(१०)	100

प्रश्न-३ शब्दार्थ	
(१)	आयुष्य स्थिति
(२)	दीजिए
(३)	कंधे
(४)	तैतीस

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ			
(१)	8	(६)	4
(२)	6	(७)	2
(३)	9	(८)	5
(४)	1	(९)	3
(५)	10	(१०)	7

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	7
(२)	✓	(२)	19
(३)	×	(३)	15
(४)	×	(४)	2
(५)	✓	(५)	20
(६)	×	(६)	11
(७)	×	(७)	4
(८)	✓	(८)	17
(९)	✓	(९)	13
(१०)	×	(१०)	16

प्रश्न-१ मिले हुए गुण + प्रश्न-२ मिले हुए गुण + प्रश्न-३ मिले हुए गुण + प्रश्न-४ मिले हुए गुण + प्रश्न-५ मिले हुए गुण + प्रश्न-६ मिले हुए गुण + प्रश्न-७ मिले हुए गुण + प्रश्न-८ मिले हुए गुण = कुल गुण

रीमार्क ____ जांचनेवाले की सही ____

Ans→
प्रश्न - ८

१. Ans→ श्वासोश्वास का नियमन आध्यात्मिक विश्व मे विशिष्ट स्थान रखता है। स्वासोस्वास जीवन के प्राण है। इसलीये उसका नियमन 'प्राणायाम' के नाम से पहचाना जाता है। इसके पूरक प्राणायम, रेचक, कुम्भक ये भेद है। जहा मन है वहा पवन है, एक के नाश से दुसरा का नाश होता है। मन के प्रवृत्ती से पवन की प्रवृत्ती होती है, उसी कारण मन व पवन का वेग नाश से सब इंद्रीयो पर जित मिल सकती है। इंद्रीयो पर विजय प्राप्त करने पर मोक्ष कि प्राप्ती होती है। अतः उसके तिन प्राण पवन को अंदर लेना, छोडना तथा जगह करना होता है। उससे पवन को साधन बनाने से चित्त एकाग्र होता है।

२Ans→ प्रातःकाल राजसभा मे मयुर कवि ने बाणकवी को आते देख तब कहा- "आओ, आओ, कोढवाला बाण आया" मयुर के ऐसे शब्द सुन राजा ने आदेश दिया- की जब तक कोढ मिटता नही तब तक बाण कवी को राजसभा मे आने कि इसी तरह नगर मे रहने की सख्त मनाई फरमायी। वह लज्जीत हुवा और नगर के बाहर जाकर आमने सामने दो खाम के स्तंभ गाडकर डोरी जोडकर उसके झुला बांधकर अग्नीकुंड जलाया सुर्यदेवता संबंधी स्तवन कहकर एक एक काव्य रचकर बोलते हुये डोरी काटते गये और सुर्यदेवता को प्रसन्न कीया सुर्यदेवता के प्रत्यक्ष दर्शन से उसका कोढ दुर हो गया वह शरीर सुवर्णमय बन गया।

३. Ans→ महोपाध्याय यशोविजयजी महाराज अध्यात्मसार ग्रंथ मे पान्च प्रकार के अनुष्ठान बताये है। ① विष अनुष्ठान ② गर अनुष्ठान ③ अननुष्ठान ④ तद्हेतु अनुष्ठान व अमृत-अनुष्ठान। ① चरमावर्त काल मे प्रवेशी हुई आत्मा की अनुष्ठान प्रति की राग सहित हेतुपूर्वक जो क्रीया है वह तद्हेतु अनुष्ठान है, इस क्रीया मे विधी शुद्ध नही पर परीणाम शुद्ध है। ② अमृत की तरह शुद्ध, विधीपूर्वक, अत्यंत अप्रमत्तदशा में, चीत्त शुद्धीपूर्वक, अत्यंत वैराग्य से भरपूर जो क्रीया है वह अमृत अनुष्ठान है। ये दोनो अनुष्ठान आत्मा को मोक्ष से जोडनेवाले होने से योगस्वरुप अनुष्ठान है।

४. Ans→ पदार्थ के सामान्य धर्म का व्यापार (उपयोग) व दर्शनोपयोग है और पदार्थ के विशेष धर्म का व्यापार (उपयोग) वह ज्ञानोपयोग है। दर्शनोपयोग के चार भेद-है ① चक्षु ② अचक्षु ③ अवधि और केवल, उसी तरह ज्ञानोपयोग के आठ भेद है। ① मती, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय व केवल, तिन अज्ञान - मति, श्रुत व विभंगज्ञान मिलाकर १२ उपयोग है। उसमे मनुष्यो के १२ उपयोग होते है, नारकी, तिर्यन्च व देवताओ के ९ उपयोग होते है, बेइंद्रीय व तेइंद्रीय के ५ उपयोग व चउरिंद्रीय के ६ व स्थावर ३ उपयोग होते है।

५. Ans→ वृद्धवादीसुरी ने वृद्धवस्था मे दिक्षा ली उन्हे विद्या चढती नही थी तब वह जोर-जोर से बोलकर पाठ करते थे, तो उन श्रावको ने उनका उपहास किया, इससे सुरी शरमिंदे और उन्होने सरस्वती देवी की आराधना शुरु कि। इक्कीसवे दिन देवी प्रसन्न हुयी और उन्हे वरदान दिया, 'सर्व विद्या परीगामी होगा, तु जैसा कहेगा वैसा होगा। एक दिन सुरीजीने चौक मे मुसल लाकर बिचोबिच रखी थी और हाथ मे पानी लेकर कहा हे सरस्वती देवी, हमारे जैसे जड मती वादी बन सकते तो मुसल फुला दे। तो मुसल फुल गई नवपल्लवीत हो गई। उनका वादीपना सर्व प्रसिद्ध हो गया।